Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत काव्यशास्त्र में शब्द शक्तियाँ

डॉ0 अशोक कुमार वर्मा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी0जी0 कालेज, महराजगंज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 6, Issue 4
Page Number : 69-72
Publication Issue :
July-August-2023
Article History
Accepted : 01 July 2023
Published : 15 July 2023

शोधसारांश– दार्शनिक जगत् में व्यञ्जना को शक्ति के रूप में नहीं स्वीकार किया गया। वस्तुतः दर्शन की प्रवृत्ति निश्चितार्थ प्रतिपत्ति के लिए होती है। अर्थ बोध में संशय, विपर्यय आदि नानात्मक अर्थों के लिए अवकाश नहीं है। फलतः प्रतीयमान अर्थ को प्रस्तुत करने वाली व्यञ्जना वृत्ति को शब्दशक्ति के रूप में स्वीकार किये जाने का निषेध किया गया है। उसका निराकरण एवं व्यञ्जना वृत्ति की प्रतिष्ठापना आचार्य आनन्दवर्धन, आचार्यवर्य मम्मट एवं कविराज विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थों में अत्यन्त विस्तार एवं तर्कों के साथ किया है।

मुख्य शब्द–संस्कृत, काव्यशास्त्र, शब्द शक्ति, अर्थबोध, संशय, विपर्यय।

ईश्वर प्रदत्त भाषा ही वह अनमोल रत्न है, जो मनुष्य को पशु–पक्षियों से पृथक् करती है। भाषा के अभाव में तीनों लोक अन्धकारमय हो जाते हैं।[1] वाक्तत्त्व या भाषा ही वह दिव्य ज्योति है, जो मानव को ऋषि, देवता या विद्वान् बनाती है।[2]

भाषा, वाणी या शब्द भिन्नार्थक होते हुए भी इस बात में समानार्थक हैं कि इन सबके द्वारा मनुष्य विचारों का आदान–प्रदान करता है। शब्द को ब्रह्म का पर्याय माना जाता है। दार्शनिक जगत् में शब्द की नित्यता एवं अनित्यता पर विचार किया गया है। व्याकरण शास्त्र में शब्द की साधुता और व्युत्पत्ति पर विचार किया गया है।

काव्य शास्त्र में शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर माना जाता है। पं0 जगन्नाथ तो शब्द में काव्यत्व स्वीकार करते हैं। काव्य की परिभाषा देते हुए विभिन्न आचार्य शब्द और अर्थ के युग्म पर ही विचार करते हैं–

1. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। (आचार्य भामह 1/16)
2. ननु शब्दार्थौ काव्यम्। (आचार्य रूद्रट 2/1)
3. अदोषौ सगुणौ सालङ्कारौ च शब्दार्थौ काव्यम्। (आचार्य हेमचन्द्र पृ0–16)
4. शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापार शालिनि। (आचार्य कुन्तक, वक्रोक्ति 1/7)
5. तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि। (आचार्य मम्मट 1/1 सूत्र)

शब्द और अर्थ दोनों में काव्यत्व माननेवाला मत ही विद्वत–समादृत है, किन्तु शब्द से अर्थ निरूपण वैय्याकरणों को गहन चिन्तनार्थ प्रेरित करता रहा है। शब्द ब्रह्म की स्थापना करने वाले वाक्यपदीपकार

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आचार्य भर्तृहरि ने इस सन्दर्भ में अत्यन्त वैज्ञानिक विवेचन करते हुए यह बताया है कि शब्द में अर्थ प्रकाशन की एक विलक्षण शक्ति निहित होती है। उसी शक्ति से वह अपने अर्थ का प्रकाशन करता है, ये शक्तियाँ तीन प्रकार की हैं– 'अभिधा, लक्षणा तथा व्यञ्जना'। कालान्तर में भाट्टमत के मीमांसकों ने तात्पर्यशक्ति को भी प्रतिष्ठित किया है।

काव्य के शब्द और अर्थ की समष्टि को समझने के लिए आचार्य मम्मट ने वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्गय, तीन प्रकार के अर्थ वाचक, लक्षक तथा व्यञ्जक तीन प्रकार के शब्द तथा तीन प्रकार के शब्दों से तीनों प्रकार के अर्थों की प्रतीति के लिए उन शब्दों में अभिधा, लक्षणा तथा व्यञ्जना नामक तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ कहीं हैं।[3] साहित्यदपर्णकार आचार्य विश्वनाथ ने इसे निर्विरोध स्वीकार किया है।[4]

साक्षात् संकेतित अर्थ को ही आचार्यवर्य मम्मट ने वाच्यार्थ या मुख्यार्थ कहा है, और उसका बोधन कराने वाला शब्दव्यापार ही अभिधा कहलाता है।[5] इसी को आचार्य विश्वनाथ ने 'अग्रिमा' नाम दिया है।

'अनेन शब्देन अयमऽर्थो बोध्यः' इसका निश्चय आखिर किसने किया इस विषय में शास्त्रकार एक मत नहीं हैं। कारिकावलीकार आचार्य विश्वनाथ ने संकेतग्रह के उपायों का संग्रह एक कारिका में किया है।[6]

व्यवहार ही संकेतग्रह का मुख्य उपाय है जिसका स्वरूप आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वनाथ आदि काव्यशास्त्रियों ने भी अपने ग्रन्थों में यथावसर किया है। इसके लिए वे 'अवापोद्वाप' की प्रक्रिया को समझाते हैं। शक्तिग्रह के सभी उपायों एवं 'अवापोद्वाप' प्रक्रिया
से अभिधा को व्याख्यायित किये हैं। यह संकेत ग्रह व्यक्ति में नहीं होता है। इससे सभी सहमत है किन्तु यह व्यक्ति के उपाधि भूत जाति, गुण, क्रिया एवं यदृच्छा इन सभी धर्मों में अथवा केवल जाति में होता है इस विषय में मतभेद है। इसका उल्लेख संक्षेप में आचार्य मम्मट ने 'संकेतितश्च चतुर्भेदोजात्यादिर्जातिरेव वा' लिखकर किया है।

अभिधा द्वारा प्रस्तुत किये गये मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के बाद जिस शब्दशक्ति के द्वारा उस मुख्यार्थ से संयुक्त अर्थ की प्रतीति होती है वही लक्षणा है।[7] यह अर्पित अर्थात् आरोपित शब्दशक्ति है[8] न कि अभिधा के समान स्वाभाविक शक्ति है।

आचार्य मम्मट एवं आचार्य विश्वनाथ दोनों काव्यशास्त्री आचार्य 'गङ्गायां घोषः' में लक्षणावृत्ति स्वीकार करते हैं। जबकि 'कर्मणि कुशलः' में आचार्य विश्वनाथ लक्षणावृत्ति का निषेध मानते हैं। दोनों ही काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में लक्षणा के हेतुओं की विस्तृत एवं व्यावहारिक विवृति दी गई है, किन्तु आचार्य विश्वनाथ का विवेचन भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सशक्त है एवं आचार्य मम्मट की व्याख्या व्यावहारिक है। अन्य आचार्य जैसे मुकुलभट्ट और धनञ्जय, पण्डितराज जगन्नाथ आदि ने भी अपने लक्षणा विषयक विचार व्यक्त किये हैं जिनमें कुछ भिन्नता है, भिन्नता का यह अल्पबीज लक्षणा के भेद–प्रभेदों में विकसित हो करके एक बड़ा अन्तर ला देता है।

आचार्य मम्मट, पण्डितराज जगन्नाथ तथा आचार्य मुकुलभट्ट ने लक्षणा के 'छः भेद' स्वीकार किये हैं। तथापि इन भेदों में कुछ मौलिक अन्तर भी है। आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के सर्वाधिक भेद–प्रभेद मानते हुए '80 भेदों' का निरूपण किया है। विद्वानों के अनुसार यह अत्यन्त सैद्धान्तिक हैं, किन्तु यह व्यवहार्य नहीं हैं। 'छः भेदों' को स्वीकार करने वाले मतों में भी आचार्य मम्मट का मत समादृत है। लक्षणा की दार्शनिक जगत् में भी बड़ी उपयोगिता है। महावाक्यों के अखण्डार्थावबोध तथा उनके अर्थसमन्वय में लक्षणा की महती आवश्यकता है। अभिधावृत्ति को तो सभी दार्शनिक सम्प्रदाय मुख्यवृत्ति के रूप में स्वीकार करते ही हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों से हटकर नव्यन्याय के ग्रन्थ 'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' में तो लक्षणा का लक्षण भी अत्यन्त तार्किक है[9], जो कि काव्यशास्त्रीय परम्परा से बिल्कुल भिन्न है। जैसा भी है अभिधा के उपरान्त लक्षणा दूसरी सर्वसम्मत शब्दशक्ति है।

व्यञ्जना काव्य का प्राण तत्त्व है या काव्य का अनिवार्य तत्त्व है। काव्यशास्त्र में व्यञ्जना को प्रायः सभी आचार्य स्वीकार करते हैं। व्यञ्जना वृत्ति का जन्म वस्तुतः लक्षणा की ही 'कुक्षि' से हुआ है। 'गङ्गायां घोषः' उदाहरण में लक्षणा की साङ्गोपाङ्ग समीक्षा करने के बाद ही आचार्य मम्मट ने यह प्रश्न उठाया है कि 'शैत्यपावनत्व' रूप इस प्रयोजन का ज्ञान हमें किस शब्द शक्ति से हुआ है। अभिधा से तो उसका ज्ञान होगा नहीं, क्योंकि उसमें शैत्यपावनत्व गङ्गा अथवा घोष का वाच्यार्थ ही नहीं तो उसके बाधित होने का भी प्रश्न नहीं उठता अतः व्यञ्जना वृत्ति को स्वीकार करना ही पड़ेगा, जिसके द्वारा उस प्रयोजन का ज्ञान सम्भव है[10]। आचार्य विश्वनाथ का भी व्यञ्जना विषयक यही विचार है[11]।

दार्शनिक जगत् में व्यञ्जना को शक्ति के रूप में नहीं स्वीकार किया गया। वस्तुतः दर्शन की प्रवृत्ति निश्चितार्थ प्रतिपत्ति के लिए होती है। अर्थ बोध में संशय, विपर्यय आदि नानात्मक अर्थों के लिए अवकाश नहीं है। फलतः प्रतीयमान अर्थ को प्रस्तुत करनेवाली व्यञ्जना वृत्ति को शब्दशक्ति के रूप में स्वीकार किये जाने का निषेध किया गया है। उसका निराकरण एवं व्यञ्जना वृत्ति की प्रतिष्ठापना आचार्य आनन्दवर्धन, आचार्यवर्य मम्मट एवं कविराज विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थों में अत्यन्त विस्तार एवं तर्कों के साथ किया है।

कुमारिलभट्ट एवं भाट्टमत के मीमांसक तात्पर्या नामक एक चौथी वृत्ति स्वीकार करते हैं। मीमांसकों के अनुसार वाक्यार्थ बोध तात्पर्याशक्ति के बिना नहीं हो सकता हैं, क्योंकि अभिधा वाक्यगत प्रत्येक पद का पृथक–पृथक संकेतितार्थ बोध कराती हैं।

मीमांसकों के अभिमत तात्पर्या शक्ति का उपयोग मम्मट ने भी 'केषुचित' कह कर किया है। वस्तुतः अर्थबोध वस्तुरिच्छा के अनुरूप ही हो, उससे भिन्न नहीं, इस विषय में तात्पर्य को स्वीकार किया जाना सबके लिए आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. इदमन्धत्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम।
   यदि शब्दाह्वयं जयोतिरासंसारं न दीप्यते।। काव्यादर्श 1/4
2. अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरूत मानुषेभिः।
   यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधान्।। ऋक्/10/125/5
3. स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।
   वाच्यादयस्तदर्थाः स्युस्तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।। काव्यप्रकाश 2/6
4. वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः।
   व्यङ्ग्यो व्यञ्जनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्य शक्तयः।। सा0द0 2/3
5. स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते। काव्यप्रकाश 2/8
6. शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
   वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सानिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः।। कारिकावली
7. मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात्
   अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।। काव्यप्रकाश 2/9

8. मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।। सा0द0 2/5
9. 'लक्षणा शक्य सम्बन्धस्तात्पर्यानुपत्तितः'
10. यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया।। काव्यप्रकाश 2/14
11. लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम्।
यया प्रत्याप्यते सा स्याद्व्यञ्जना लक्षणाश्रया।। सा0द0 2/15